Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR - **SJIF-6.586,** IIFS-4.125, ISSN-2454-6283

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय बहु भाषीय एवं बहु शाखीय शोध-पत्रिका

पूना कॉलेज, पूना, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप 06 मार्च, 2020
वेबीनार विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त 2021

AUGUST 15, 2021

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका
PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी
इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप
06 मार्च, 2020

ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR - **SJIF-6.586,** IIFS-4.125, ISSN-2454-6283

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

वेबीनर विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त, 2021

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड
9405384672

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

प्रकाशन / प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड–महाराष्ट्र

मुद्रण / मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com
वेबसाइट www.shodhritu.com
"शोध–ऋतु ' तिमाही पत्रिका में आलेख लेखक निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें ।
फॉण्ट–कृति देव 10 वर्ड फाइल में ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी ।
आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी ।
आलेख विशेषज्ञों द्वारा चयन किये जायेंगे ।
चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी ।
चयनित आलेख के लिए 1000रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा ।
लेखक मौलिक शोधपरक एवं वैचारिक आलेख ही भेंजे ।
व्हाट्स एप–9405384672

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

बैंक विवरण

NAME	SUNIL GULABSING JADHAV
BAINK	BANK OF MAHARASHTRA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA
ACCOUNT NO.	2015 8925 290
IFSC CODE	MAHB0000720

अनुक्रमणिका

1.इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रिंट मीडिया पर प्रभाव–*डॉ. (श्रीमती) अनसूया अग्रवाल,* 9
2.मीडिया का बदलता स्वरूप–*डॉ. श्रीमती मृदुला शुक्ला*.....11
3–साहित्य एवं मीडिया का समाज पर प्रभाव–*डॉ.नुरजाहान रहमातुल्लाह* 14
4–इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में मानवीय संवेदना के आयाम–*डॉ. प्रिया ए.*.....16
5.साहित्य और मीडिया–*सुरजीत कौर*.....18
6.बदलते परिप्रेक्ष्य में साहित्य और मीडिया की भूमिका–*डॉ. कुसुम कुंज मालाकार*.....20
7.इक्कीसवी सदी में बदलता हुवा नारी स्वरूप–*तोंडचिरकर मीना बाबूराव*.....22
9.आधुनिक हिन्दी साहित्य के विविध परिदृष्य–[1]*प्रा. डॉ. रमा दुधमांडे,* [2]*प्रा. डॉ. शिल्पा जिवरग* 25
10. इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में विभिन्न विमर्श–*डॉ. बालासाहेब सोनवने,*.....27
11.वेब मीडिया और हिन्दी–प्रा. सौ. संजीवनी रा. नाईक.....29
13. वेब मीडिया एवं भाषा अध्यापन–*डॉ. भाऊसाहेब नवनाथ नवले* 35
14.साहित्य एवं मीडिया का समाज पर प्रभाव–डॉ.समीर गुलाब सय्यद 38
15.'विखार विळखो' उपन्यास में नारी विमर्श–छाया रत्नाकर पांढरकर 40
16.इक्कीसवीं सदी में हिन्दी साहित्य का बदलता स्वरुप–डॉ.दत्ता साकोळे 42
17.इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविताओं में मूल्य परिवर्तन(मणि मोहन की कविताओं के विशेष संदर्भ में)–*डॉ.प्रवीणकुमार न. चौगुले*44
18.वृद्ध विमर्श और गिलिगडु उपन्यास–देशमुख शहेनाज अ.रफिक 47
19.इक्कीसवी सदी के साहित्य एवं मीडिया में मूल्य परिवर्तन–*डॉ.दिलीपकुमार कसबे*.....49
20.मीडिया और साहित्य–प्रा. दिपाली तांबे.....52
21.इक्कीसवी सदी का उपन्यास साहित्य और स्त्री विमर्श–*डॉ द्वारका गिते* 54
22.हिंदी पत्रकारिता और साहित्य में अंतः सम्बन्ध–*डॉ.नवनाथ गाड़ेकर*.....56
23.इक्किसवी सदी की कहानियों में स्त्री विमर्श–मेहरून्निसा परवेज की कहानियों के संदर्भ में–*डॉ.गजाला वसीम अब्दुल बशीर शेख* 58
24. इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास साहित्य में मूल्य परिवर्तन :विभूति नारायण राय लिखित उपन्यास 'घर' के विशेष सन्दर्भ में निमन्त्रित सदस्य, *प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ* 'वेदार्थ' 61

अकेली और पति की मृत्यू के बाद भी अकेली एवं फालिज से पीडित स्त्री के दु:खों को बडी बेबाकी से उकेरा है।

मेरे बस्तर की कहानियों में प्रकाशित 'अयोध्या से वापसी' कहानी कि नीरा अपने दाम्पत्य जीवन से सुखी नहीं है। क्योंकि उसका पति राजेन्द्र उस पर शक करता है और हमेशा उसकी जासूसी करता रहता है। उसे अपनी पत्नी पर शक है; कि कोई अन्य पुरूष उसके जीवन में है। संदेह या शक के कारण दाम्पत्य संबध और पत्नी का जीवन किस प्रकार नरक बन जाता है; इस बात को लेखीका ने यहाँ प्रस्तुत किया है। साथ ही इस बात को भी दर्शाया गया है कि हर नारी सर झुका कर चुपचाप पति द्वारा किया गया अपमान सहन नहीं करती बल्कि नीरा जैसी आधुनिक नारी मुखर हो प्रतिरोध करती है।

कहा जा सकता है की लेखिकाने इन इक्किसवी सदी की कहानियो में स्त्री की पीडा उसके सपने और संघर्षो को स्त्री की दृष्टि से अत्यंत प्रामाणिक और यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। भारतीय स्त्री के यातनापूर्ण जीवन, सामाजिक बंधन जबरदस्ती लादे गऐ संस्कार आदि के साथ सहिष्णुता और मातृत्व की छवी को भी प्रस्तुत किया है। लेखिका ने जहाँ अबला नारी के दर्द को उभारा वहीं परंपरा से चले आ रहे पुरूष सत्तात्मक नियमों का विरोध करनेवाली स्त्री पात्रों का निर्माण कर स्त्री जागरूकता को भी प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1) चमडे की खोल – मेहरून्निसा परवेज – मेरे बस्तर की कहानियाँ, पृ. 215
2) जगार – मेहरून्निसा परवेज – समर, पृ. 45
3) जीवन मंथन – मेहरून्निसा परवेज – समर, पृ. 70
4) नया घर – मेहरून्निसा परवेज – पृ. 36
5) कोई नहीं – मेहरून्निसा परवेज – लाल गुलाब, पृ. 45

24. इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यास साहित्य में मूल्य परिवर्तन :विभूति नारायण राय लिखित उपन्यास 'घर' के विशेष सन्दर्भ में निमन्त्रित सदस्य,

प्रा. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ वेदार्थ

हिन्दी अध्ययन मण्डल, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय, औरंगाबाद

मानव के जीवन में मूल्यों का अत्यन्त महत्व है। मूल्य के आधार पर ही मानव समाज की व्यवस्था चल रही है। मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में यही धारणा है कि मूल्यों की अवधारणा मानव संस्कृति के विकास के साथ–साथ स्थापित हुई होगी और विकसित होती रही होगी। ये मूल्य कालसापेक्ष होते हैं। अत: पुरातन मूल्यों के ऱ्हास और नूतन मूल्यों के निर्माण की आवश्यकता अनुभव होती है। इसे ही मूल्य परिवर्तन कहा जाता है। मूल्य प्रक्रिया अनन्त है। इसकी तुलना उस वटवृक्ष से की जा सकती है, जिसकी एक जड़ से अनेक जड़ें फैलती रहती हैं। पुरानी जडें नष्ट होती जाती हैं और नई जड़ें विकसित होती रहती हैं। मूल्य परिवर्तन को समझने के लिए पहले मूल्य की परिभाषा जान लेना आवश्यक है।

मानव समाज के अन्तर्गत आनेवाले मूल्यों का वर्गीकरण अनेक प्रकार से किया जाता है। जैसे शाश्वत मूल्य और परिवर्तनीय मूल्य, साध्य मूल्य और साधन मूल्य, नैतिक मूल्य और भोगवादी मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य, शारीरिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, मनोरंजनात्मक मूल्य, चरित्रात्मक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, बौद्धिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, पारिवारिक मूल्य, कबीले के मूल्य, राजनीतिक मूल्य आदि।

इन मूल्यों में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्, त्याग, समर्पण, अहिंसा, करूणा, उदारता, शोषण मुक्ति, आर्थिक समता, रोजगार के समान अवसर, विवाह, समता, स्वतन्त्रता, बन्धुता, पारिवारिकता, जातीय संस्कार, आस्तिकता, आनन्द, मोक्ष, जप–तप, विधि–निषेध, राष्ट्रीयता, देशप्रेम, विधिपालन आदि का समावेश हो जाता है।

मूल्य परिवर्तन :– आधुनिक युग में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, राजनीति, आदि के प्रति नई धारणाएँ जन्म ले रही हैं। अर्थात् मूल्य परिवर्तन

हो रहे हैं। इन मूल्यों में से काम सम्बन्धी मूल्य सर्वाधिक परिवर्तनशील होते हैं। जैसे पुरातन भारतीय संस्कृति के अनुसार विवाह बन्धन, यौनशुचिता, एकपत्नीव्रत और एकपतिव्रत काममूलक मूल्य हैं। भारतीय हिन्दू समाज में विवाह को एक पुनीत, धार्मिक एवं आत्मिक सम्बन्ध के रूप में स्वीकार किया गया है। परिणामतः यहाँ विवाह–विच्छेद और पुनर्विवाह की कल्पना अशक्यप्राय मानी जाती है। भले ही सतीप्रथा का पूर्णतः उन्मूलन हो चुका हो किन्तु अभी तक विधवा विवाह की अवधारणा पूरी तरह से समाज ने स्वीकार नहीं की है। चाहे यह विधि सम्मत और समाजसुधारकों द्वारा बहुतांश में प्रोत्साहित क्यों न की गई हो। विवाह के इस आदर्श मूल्य रूप के परिणामस्वरूप स्त्री–पुरूषों के काममूलक सम्बन्धों में आस्था, दायित्व और कर्तव्य के आजीवन निर्वाह की मधुर दिशा का निर्देश स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ठीक इसके विपरित पाश्चात्य देशों में इन मूल्यों के स्थान पर विवाह स्वतन्त्रता, विवाहबाह्य सम्बन्ध, विवाह–विच्छेद, विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह आदि को निन्दनीय नहीं माना जाता। फलतः वहाँ स्त्री–पुरुषों के सम्बन्धों में उन्मुक्त काम सम्बन्ध और काम सम्बन्धों के विविध आयाम दिखाई देते हैं। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव स्वरूप धीरे–धीरे ये सारे मूल्य भारतीय साहित्य में भी दिखाई दे रहे हैं।

इसी तरह से अर्थमूलक मूल्यों में भारी परिवर्तन आ चुका है। यौनशुचिता की तरह ही अर्थशुचिता का भी बँटाधार हो रहा है। प्रामाणिकता, ईमानदारी, सन्तोष आदि के स्थान पर चोरी चुँगी, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, अनैतिक कमाई, घोटाले आदि मूल्य धीरे–धीरे समाज द्वारा ही स्वीकार्य हो रहे हैं। संक्षेप में कहें तो 'अर्थ ही धर्म और काम ही मोक्ष हो चुका है।' पारिवारिक मूल्यों का विघटन इस बारे में खतरनाक रूप धारण कर चुका है। भारतीय परिवार संस्था में चार पुरूषार्थों की तरह ही चार आश्रमों का उल्लेख किया जाता है। अर्थात् आयु के अनुकूल बचपन में पढ़ाई (ब्र2चर्याश्रम), युवावस्था में कमाई और सन्तानों का लालन–पालन, अधेड़ अवस्था में धर्माचरण (वानप्रस्थ) एवं वृद्धावस्था में सर्वसंगपरित्याग (संन्यास)।

विभूति नारायण राय पुलिस प्रशासकीय सेवा में रहे हैं और महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति भी रह चुके हैं। आपको साहित्यिक योगदान के लिए इन्दु शर्मा अन्तर्राष्ट्रीय कथा सम्मान जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। आप 'वर्तमान साहित्य' पत्रिका के संस्थापक संपादक भी रह चुके हैं। आप एक ऐसे लेखक हैं, जो मानवी मूल्यों में आ रहे परिवर्तनों पर एक कटाक्ष मात्र नहीं करते अपितु भाष्य तथा कारण–मीमांसा भी करते हैं।

'घर' उपन्यास में मूल्य परिवर्तन :– आज के जमाने में उपर्युक्त भारतीय चार पुरूषार्थ एवं चार आश्रम रूपी मूल्य इतने परिवर्तित हो चुके हैं कि उनके क्षरण से समाप्ति तक की नौबत आ चुकी है। मसलन जिस आयु में विद्यार्जन करना होता है, अर्थाजन के लिए बरबाद किया जाता है और जिस आयु में घर बैठकर आराम करना होता है, उसी में बच्चों को नौकरी लगाने के लिए दौड़–धूप करनी पड़ती है। युवतियों को योग्य वर न मिलने के कारण घर पर ही कुँवारी बैठाया जाता है और उम्र ढल जाने पर दुहाजू–तिहाजू वर के साथ बाँध दिया जाता है। इतना ही नहीं स्कूली बच्चे अपनी कुमारावस्था में ही कामजीवन में रस लेने लगते हैं। कुल मिलाकर पारिवारिक मूल्यों का विघटन हो जाता है। इसी प्रकार के पारिवारिक मूल्यों के परिवर्तन की गाथा है – 2010 में राधाकृष्ण से प्रकाशित उपन्यास 'घर' जिसके लेखक हैं – विभूति नारायण राय।

प्रस्तुत शोधालेख में आपके केवल 'घर' इसी उपन्यास पर विचार किया जा रहा है। 'घर' उपन्यास एक छोटा–सा उपन्यास है, जो लगभग 100 पृष्ठों का कलेवर लिये है। इसमें एक अवकाश प्राप्त प्राथमिक शिक्षक के परिवार में आये तूफ़ान को चित्रित किया गया है। आलोच्य उपन्यास में 'समीकरण पेंशन और बाज़ार–भाव का', 'किस्सा उस राजकुमारी का जिसे लेने कोई राजकुमार नहीं आया', 'इस साल का दिसम्बर', 'पनियायी आँखों का भविष्य' और 'जैसे उनके दिन फिरे' ये पाँच अध्याय हैं। मुंशी रामानुज लाल 'घर' से 'मकान' में किस तरह परिवर्तित होता है। मुंशी रामानुज लाल श्रीवास्तव की पत्नी तारा गुजर चुकी है। बेटी राजकुमारी अविवाहित है। बड़ा बेटा विनोद बी. ए. करने के बाद एम. ए. की महाविद्यालयीन शिक्षा छोड़कर नौकरी पाने के बहाने घर के बाहर ही रहता है। छोटा बेटा पप्पू की इंटर की पढ़ाई जारी थी।

मुंशी जी के पिताजी किसी जमींदार के कारकून थे। इस नाते पिताजी ने ने भी थोड़ी–बहुत जमीन कमाई थी। जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के बाद पिताजी के सारे ठाठ समाप्त हो गये। केवल जमीन ही बची रही। इस जमीन के टुकडे के दावेदार थे चार भाई और तीन बहनें! तीन बहनों की शादी में ही पिताजी की सारी सम्पत्ति समाप्त हो गयी। जमीन का एक हिस्सा बेचकर तीसरी बेटी की शादी करनी पड़ी। मुंशी जी के अलावा सारे भाइयों ने इस फ़िजुलखर्ची का विरोध किया। मुंशी जी बड़े थे उन्होंने पिताजी की इच्छा के विरूद्ध पढ़ाई कर प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक का काम शुरू किया। दो साल अकेले रहकर बाद में अपनी पत्नी को भी साथ ले गये।

राजकुमारी से छह साल छोटा विनोद और विनोद से चार साल छोटा पप्पू था। तारा की मृत्यु के बाद मुंशी जी एक तरह से अकेले पड़ गये थे। तारा की मृत्यु से पहले ही वे रिटायर हो चुके थे। उन्होंने तारा के उपचार में अपने प्रॉविडैंड फंड का अधिकांश हिस्सा खर्च डाला था। इस कारण पेंशन के कुछेक रूपयों में उनका घर चलना कठिन हो चुका था। "दूध और अखबार को छोड़कर वे दूसरी मदों में कटौती करने की बात सोचते हैं। कोई खर्च ऐसा नहीं है जहाँ कटौती करना संभव हो। पेंशन और बाज़ार–भाव का समीकरण काफ़ी जटिल था और भाषा के अध्यापक मुंशीजी तो शुरू से ही गणित में कमज़ोर रहे हैं।" [प] विनोद को नौकरी नहीं मिल पा रही थी। वह अपना जेब खर्च ट्युशन करके निकाल लेता था। अनेक बार नौकरी के साक्षात्कार देकर वह निराश हो चुका था।

मुंशी जी चाहते थे कि उनका काबिल शिष्य और नायब तहसीलदार का बेटा त्रिवेणी विनोद को कोई नौकरी लगा देगा। विनोद शंकर से बहुत नफ़रत करता था। उसे यह पसंद नहीं था कि पिताजी राजकुमारी को ही शंकर की दुकान पर उधार लाने भेज देते हैं। फिर यह सोचकर चुप हो जाता था कि शंकर गालियाँ बकते हुए ही क्यों न हो राजकुमारी को उधार तो देता है, मुंशीजी, विनोद या पप्पू को तो उधार बिलकुल नहीं देगा। विनोद की नौकरी के लिए त्रिवेणी प्रयास करता है पर असफल होता रहता है। फिर भी वह उसक आश्वस्त करता रहता है। " नई वाली साइट के पास ही मेरा भी काम चल रहा है। मैं रोज़ सबेरे मेरी मोटार साइकिल पर विनोद को भी लेता जाऊँगा और शाम को मेरे साथ वह लौटकर भी आएगा और फिर एक बार डिपार्टमेंट में घुस जाने पर किसी परमानेंट क्लर्क की जगह मिल सकती है, रोज तमाम वैकेंसीज होती रहती हैं।" [पप]

संक्षेप में कहा जाये तो 'घर' उपन्यास मध्यवर्गीय परिवार की विडम्बनापूर्ण जीवन–स्थितियों का दारूण दस्तावेज है। "ऐसा कैसे हुआ? आखिर क्यों, एक भरा पूरा घर सिर्फ ईंट–गारे के मकान में परिवर्तित होकर रह गया? घर शब्द से जुड़ी ऊष्मा कैसे एकाएक वाष्प बनकर उड़ गई? जाहिर है इन सवालों का जवाब यह निर्जीव मकान नहीं दे पाएगा, भले ही इस परिवार के एक–एक सदस्य से इसका पुराना परिचय रहा है।" [पपप]

राजकुमारी का चिन्तन इस बारे में सही माना जाना चाहिए कि, "उसका मन करता है कि चीखे–चिल्लाए, अपने बदन बदन के कपड़े तार–तार कर डाले। उसकी नसें तड़क रही हैं। एक अजनबी आग है जो पूरे शरीर को जलाकर भस्म कर डालना चाहती है।.... अगर वह मुंशी जी से विद्रोह कर दे तो। लेकिन नहीं, शायद ऐसा वह नहीं कर सकती।" [पअ] पप्पू का हमउम्र लड़का सुरेन्द्र आयु से पहले ही जवान हो चुका था, जो राजकुमारी के साथ ग़लत–सलत काम करना चाहता था। सुरेन्द्र के पिता बड़े बाबू भी राजकुमारी का उपभोग लेना चाहते थे। दुकानदार का बेटा कार्तिकेय भी उधारी के बहाने राजकुमारी को छू लेना चाहता था। पर बढ़ती उम्र के साथ बड़े बाबू और शंकर के बेटे ने भी राजकुमारी को नज़रन्दाज करना शुरू किया। राजकुमारी का विवाह नहीं हो पा रहा था। वह अठ्ठाईस साल की उम्र में ही बुढ़ी लगने लगी थी। धीरे–धीरे राजकुमारी को ग़लत आदतें लग रहीं थीं। पहले तो मुंशी जी राजकुमारी को बहुत मारा करते थे। पर अब उन्होनें उसे मारना भी छोड़ दिया था। वह अपने सपनों के राजकुमार का इंतज़ार कर रही थी। किसी देश का राजकुमार सफ़ेद घोड़े पर सवार होकर उसकी तरफ़ आ रहा है। वह वयस्कों के लिए लिखें गये उपन्यास पढ़ रही थी। मुंशी जी किसी बहाने घर के बाहर निकलते थे, तो छोटे–छोटे बच्चे उन्हें राजकुमारी के नाम से चिढ़ाते थे।

एक ही छत के नीचे रहते हुए भी घर के प्राणी एक–दूसरे से एकदम कटकर संवादहीनता की अँधी सुरंग में क्यों फँस गये जहाँ न परिचित स्पर्श था और न ही स्वर? इन सवालों के जवाबो के अलावा यह हमारी व्यवस्था की उन विडम्बनाओं और विद्रूपताओं की कहानी भी है, जिसमें फँसकर एक पढ़ा लिखा नवयुवक बेरोजगारी का दंश झेलते हुए नपुंसक आक्रोश से भर उठता है और स्वयं से तथा समाज से आँखें चुराने लगता है, दूसरी तरफ़ यह उन हजारों राजकुमारियों के करुण दुःख की कथा भी है जिन्हें कोई राजकुमार लेने नहीं आता। [3]

[1] घर – विभूति नारायण राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 20

[1] घर – विभूति नारायण राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 57

[1] घर – विभूति नारायण राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 79

[1] घर – विभूति नारायण राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृ. 28–29

[1] घर – विभूति नारायण राय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2010, फ्लैपर

25.इक्कीसवीं सदी में मीडिया का बदलता स्वरूप

–डॉ. झगडे व्ही. एस.

हिंदी विभाग (सहायक अध्यापक)

शारदाबाई पवार महिला महाविद्यालय,शारदानगर, तह.बारामती.

विज्ञान की प्रगती और तकनिकी विकास के साथ मानव के जीवन में मीडिया अपने परिवर्तन के कारण शक्तीशाली माध्यम बन गए है। वैश्विकरण के इस युग में जनसंचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग प्रभावी रूप में हो रहा है। कोई सूचना, विचार या भाव दूसरों के साथ बाँटना संचार कहलाता है। संचार जीवन के लिए आवश्यक अंग बन गया है। अब सोशल मीडिया संचार का सबसे बड़ा माध्यम साबित हो रहा है, और तेज गति से लोकप्रियता के शिखर तक पहुँच रहा है। मीडिया का रूप व्यापक है। दूर–दूर तक फैले जन तक संदेश, समाचार, ज्ञान–विज्ञान और मनोरंजन को पहुँचानेवाला माध्यम मीडिया है।

आधुनिक युग में मीडिया के मोबाईल, आकाशवाणी, समाचार पत्र, दूरदर्शन, फिल्म, कम्प्युटर, इंटरनेट, फेसबुक, ट्विट, इन्स्टाग्राम, टैबलैट, वॉटस्ॲप, टेलीफोन, टेलीप्रिन्टर, टेलेक्स, टेलीकॉम, फैक्स, वीसीआर आदि प्रमुख है। आज मीडिया के बदलते स्वरूप ने पुरी दुनिया नजदीक आ गई है और हम चिल्ला रहे हैं 'कर लो दुनिया मुट्ठी में'। विश्व का ग्लोबलाइझेशन करने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज अलग–अलग क्षेत्रो में तेज गति से विकास होने के कारण संचार माध्यमों में हमें परिवर्तन दिखाई देता है। सूचना प्रौदयोगिकी हमारे दैनिक कार्य प्रणाली से लेकर कृषि, वाणिज्य व्यापार, आरोग्य चिकित्सा आदि विविध क्षेत्रों में सूचना प्रौदयोगिकी ने सभी को प्रभावित किया है। व्यापार, उत्पादन, मनोरंजन, अनुसंधान, बैंक, बिमा और राष्ट्रीय रक्षा जैसे विविध क्षेत्रों को इसने प्रभावित किया है।

समाचार पत्रः–

वर्तमान युग में हिंदी समाचार पत्र दैनिक जीवन के अनिवार्य अंग है। समाचार पत्र में हिंदी के अनेक रूप है।

जैसे– 1) आंचलिक (क्षेत्रिय) 2) प्रादेशिक (प्रदेश की)
3) साहित्यिक।

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL